

सुश्रुतसंहिता ।

श्रीधन्वन्तरिभगवता समुपादिष्टा तच्छि-
प्येण सुश्रुतेन विरचिता ।

सा च

आरोग्यमुवाकरसंपादकेन फरुखनगरनिवा-
सिना पण्डितमुरलीधरशर्मणा राजवैद्येन
सान्वय सटिप्पणीक-संपरिशिष्टया
भाषाटीकया सम्भूषिता ।

तत्र

४-चिकित्सितस्थान ५ कल्पस्थानं च

टीकाकारेण पुन सशोधितं

तदिदं स्थानद्वयं

क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुद्रयिष्यं

(चेतयादी ७ वीं गली सम्पादा हैन)

स्वकीये 'श्रीविद्वटेश्वर' (स्टीम) मुद्रणयन्त्रालये
द्वितीयावृत्तौ-मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

सन् १९६८, शके १८९३, सन् १९११

प्रस्तावना ।

प्रायः ऐसा अनुमानमें आता है कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि समस्त कार्योंका मूल केवल आरोग्य ही है इसके आरोग्य रहनेसे सपूर्ण कार्य ठीक होते हैं इसीलिये नीतिशास्त्रज्ञोंने भी कहा है कि—“आत्मान सततं रक्षे ह्येकपि धनैरपि” और भगवान् धन्वन्तरिजीने तो इसकी रक्षाके अर्थ आयुर्वेद और अनेक प्रकारकी औषधियां निर्माण की हैं इसलिये आरोग्यकी मुख्य रक्षा क्या है कि आरोग्य होना, यह वैद्यविद्याके अर्थान है यद्यपि हम वैद्यक विषयके बृहत् ग्रन्थ अनेक हैं कि, जिनमें प्रत्येक रोगोंके निदान और रोगानुसार उपयोगी औषधियां तथा और २ उपाय कथन किये हैं तथापि महात्मा सुश्रुतजीकी रची हुई यह ‘सुश्रुतसंहिता’ सप्त ग्रंथोंमें बढकर है, क्योंकि ऐसा कोई रोग नहीं कि जिसके दमनमें इसमें औषधियां नहीं कही हों और विचित्रता यह है कि, धनी व फगाल सबके योग्य औषधियां इसमें कही हैं, इसीलिये कहा है कि—“सुश्रुतो न श्रुतो येन वाग्भटे न च वाग्भटः । चरको नालोकिनो येन स वैद्यो यमर्षिकरः” ॥

इस ऐसे उत्तम ग्रन्थको संस्कृत भाषामें होनेके कारण संस्कृतभाषा नमिज सर्व समारी जीवोंको विषेण लाभ नहीं होताथा इसलिये विचारार्थ कर नयके मुलभार्य इस ग्रन्थकी मनेतर व सर्वगुणसंपन्न भाषाटीका पद्धितर श्रीमुग्लीधर्मी राजवैद्यद्वारा निर्माण पणय यह ग्रन्थ भाषाटीकाविभूषित मुद्रित किया है ।

ग्रन्थाहुल्यता होनेसे इसके भिर भित् ४ भाग मुद्रित किये हैं जिनमेंसे यह तृतीय भाग है इनमें चिकित्सित और चण्ड दा ग्या है जिनमेंसे चिकित्सितस्थानमें तो सपूर्ण प्रकारके रोगोंकी निम्नित्तये अनेक २ प्रकारमें वर्णित हैं और चण्डस्थानमें ये अनेक प्रकारके सुंदर चण्ड कहें हैं कि जिनके कारणसे मनुष्य वृद्धताको त्यागकर पुन युवा होजाता है ।

मसारमें विदितगुणवाले अत्युत्तम इस ग्रन्थकी विविध प्रयोगा नहीं करनकने क्योंकि सागरका चल कर्मा सागरमें समाता है ? इसलिये हमनेसे ही इसके गुण विदित होंगे, आशा है कि वैद्यविद्यारहित महाशय गौरवही इस ग्रन्थको महणर विनापूवक इसके द्वारा औषध प्रयोग कर अनेकोंके लाभ उठा हमारे विश्वमयी सचर समुह ।

विद्वत्पदार्थार्थ -

सोमराज श्रीकृष्णदास, सारदा “श्रीवेदशर” स्त्रीय मुद्रण-प्रान्त-मुद्रण

अथ सुश्रुतसंहिताचिकित्सितस्थान- विषयाऽनुक्रमणिका ।



विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
प्रथमोऽध्यायः १		शोणितास्थापनविधि	८०३
द्विगुणीय चिकित्सितका व्याख्यान	७८९	निर्वापण	"
दो प्रकारके मण	"	उत्सारिकास्वेदन विधि	"
आगतुकमणर्म तात्कालिक विधि	७९०	शोधन	८०४
मणमें दोषभेद	"	शोधिनीरसक्रिया	"
मणके सामान्य विशेष लक्षण	७९१	रोपण	८०५
वातादि भेदसे १५ प्रकारके मणलक्षण	"	मणधूपन	८०७
शुद्ध मणके लक्षण	७९३	उत्सादन	८०८
मणके ६० उपक्रम	"	अवसादन	"
उपक्रमोंके कार्य और कथन	७९५	मृदुकर्म	"
अपतपण विधि	७९६	दारुणकर्म	"
लेपन विधि	"	क्षारकर्म	८०९
परिषेक विधि	७९७	अमिकर्म	"
अभ्यंग "	"	कृष्णकर्म	"
स्वेदा "	"	पाण्डुकर्म	८१०
विम्लापन "	"	प्रतिस्मरण	८११
उपनाह "	७९८	रोमसजनन	"
पाचन तथा उत्सारिका विधि	"	रोमापहरण	"
रक्तस्रवण विधि	"	वस्ति और उत्तरवस्ति	८१२
खेहपा " "	७९९	यधन	"
घमन और विरेचन	"	पत्रदान	८१३
छेदन विधि	८००	कृमिनाशन	"
भेदन विधि	"	ब्रह्मकर्म	८१४
दारुण विधि	"	विषनाशन	"
लेहान विधि	"	शिरोविरेचन नस्य	"
एषण विधि	८०१	कन्तधारण	८१५
आहारण विधि	"	धूमपान	"
भ्यघ्न और घ्राण	८०२	गण्डुगर्पि	"
घोषा और सापानकी विधि	"	यज्ञकर्म	"
पीटन विधि	"	आहार	८१६
		रक्षाविधान	"

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
शैथिल्यप्रयोगविधि	८१७	उन्मिष्ट और सिद्धिष्ट शैथिल्य विधि	८१९
प्रणाले उपद्रव	८१८	प्रणाल्यादी विधि	"
द्वितीयोऽध्यायः २			
अपचिन्तितस्य व्याख्यान	८१८	पादमादी विधि	८३७
संज्ञानाले ६ प्रकार	८१९	कटिभ्रमका यन्त्र	"
विप्लवस्थिति	"	पादमाका यन्त्र	"
मित्रके स्थिति	"	हस्तलग्नमाका यन्त्र	८३८
शोथ और उनके भेदके लक्षण	८२०	अन्यभ्रमका यन्त्र	"
आमाशयादिगत रश्मिके लक्षण	"	प्रीत्यर्थे हि हृदगदी हो तो यन्त्र	"
विद्वन्मन	८२१	तादृश और यन्त्रमाका विधि	८३९
क्षतके लक्षण	"	कपालमाका विधि	८४०
विषितके लक्षण	"	अभिघातशेषविधि	"
पृष्ठके लक्षण	"	अपाहिमारी विधि	"
यन्त्र	"	संविभ्रमारी विधि	"
शोथ कण्डूएरी विधि	८२३	वाक्प्राप्त और शिरा आदिके माका विधि	८४१
अन्यराज्य रीति	८२४	मर्ममर्म उपयोगी मर्मपत्र	"
मित्रता विधि, निम्नले हुए मर्मोका विर	"	मर्मपत्रके गुण	८४२
विद्वन्मन	"	चतुर्थोऽध्यायः ४	
उदरमित्रारी विधि	८२५	वाक्प्राप्तविधिनिमित्तस्य व्याख्यान	८४४
शाल्यपुष्पके उपद्रव	८२६	आमाशयगत वायुका यन्त्र	"
आमाशय और पत्राशयगत रश्मिके यन्त्र	"	पत्राशय और वरिणग वायुका यन्त्र	"
मित्राग्रेष्ठस्य व्याख्यान	"	धोमादिमे प्राप्त वायुका यन्त्र	"
शोथप्रवेशन	८२७	वायुप्राप्तित और रश्मिके वायुका यन्त्र	८४५
शैथिल्य व्याख्यान व्याख्यान करना	"	शुक्रगत वायुका यन्त्र	"
अन्यभ्रमविधिप्रकाश	८२८	सर्वांग और एकांगगत वायुका यन्त्र	"
शाल्य भावेने उपयोगी मर्मगादि तैल	८२९	वाक्प्राप्तिते भेदन और उपनाद	८४६
शाल्यभावेने यन्त्र	८३०	रश्मिके अश्रमगत वायुकी विधि	८४७
हृदयग्रीवो धेना	८३१	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	"
अन्यभ्रम व्याख्यानक रश्मिके तैल	८३२	अन्यभ्रमारी विधि	८४८
तृतीयोऽध्यायः ३			
अपचिन्तितस्य व्याख्यान	८३३	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८४९
मर्मका कर्तव्यव्यवस्था	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८५०
मर्मका ६ भाग्य और पत्र	८३४	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८५१
मर्मका कर्तव्य और अर्थात्	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८५२
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८५३
मर्मका कर्तव्य	८३५	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८५४
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८५५
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८५६
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८५७
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८५८
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८५९
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८६०
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८६१
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८६२
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८६३
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८६४
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८६५
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८६६
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८६७
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८६८
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८६९
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८७०
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८७१
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८७२
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८७३
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८७४
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८७५
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८७६
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८७७
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८७८
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८७९
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८८०
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८८१
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८८२
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८८३
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८८४
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८८५
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८८६
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८८७
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८८८
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८८९
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८९०
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८९१
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८९२
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८९३
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८९४
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८९५
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८९६
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८९७
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८९८
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	८९९
अपचिन्तित	"	वाक्प्राप्तिते यन्त्र	९००

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
अथ योग	८५५	भिलावके विधान और सेवनकी विधि	८७८
कफप्रधान वानरक्तमें औषध	८५६	दूसरी विधि	८७९
दूसरा योग	८५७	तीसरी विधि	"
तीसरा योग	८५८	अशामें भिलावाँ और कुडा आदिकी भेष्टना	८८०
चातरक्तमें भोजन	८५९	अशं रोगोंपर पन्थापन्थ	"
चातरक्तमें अन्य उपाय	"	अथ सप्तमोऽध्यायः ७	
चातरक्तमें कुपन्थ	८६०	अश्मरी (पथरी) चिकित्सितका व्याख्यान	८८१
अपतानकषायचिकित्सा	"	अश्मरीका रूप तथा लक्षण	"
अपतानकषय भद्रदावादि काय	"	वाताश्मरीचिकित्सा	"
पिप्पलीमूलादिपरिपेक	८६१	पित्ताश्मरीचिकित्सा	८८२
पक्षाघातकी चिकित्सा	८६२	कफाश्मरीचिकित्सा	"
मयास्तमकी चिकित्सा	८६३	शकरा और पथरीनाशक यत्न	८८३
अपतत्रषायुकी चिकित्सा	"	दूसरा यत्न	"
अर्दितवायुकी चिकित्सा	"	तीसरा यत्न	८८४
गुग्गुली आदि	८६४	छेदकर पथरी निकालनेकी विधि	८८५
कणशूलका यत्न	८६५	क्षीरशूलके दवापसे रक्त निशालनेकी विधि	८८७
तूणी, प्रतूणीकी चिकित्सा	"	रक्त निशालनपर लेप	"
आध्मान और मत्याध्मानका यत्न	"	रक्त निशालनेपर दश दिन तककी विधि आदि	
अष्टौला, प्रत्यष्टौलाका यत्न	"	कावर्णन	८८८
ऊरुस्तमलक्षण	८६६	बीरा लगानेमें त्याज्य स्थान	८८९
ऊरुस्तमकी चिकित्सा	८६७	अथाष्टमोऽध्यायः ८	
ऊरुस्तममें भोजननादि	"	भगदरचिकित्सितका व्याख्यान	८९०
गुग्गुलुफल	८६८	भगदरके भद्र	"
गुग्गुलुसेवनविधि	"	भगदरकी फुन्गीका आय प्रयत्न	"
अथ षष्ठोऽध्यायः ६		परी फुन्गीका यत्न	"
अश चिकित्सितका व्याख्यान	८६९	दानपोनकी चिकित्सा	८९१
अशपर क्षार लगानेकी विधि	८७०	दानपोनकमें म्रण करनेका प्रकार	"
भस्म आदि कौटनेकी विधि	"	छेदनेके लक्षण	८९२
मस्से आदिकी चिकित्सा	८७१	दय और प्रकृतिके अनुसार दानपोनका	
यत्र ऋगादर क्षार अमि तथा शल्लकम करना	८७२	साध्यासाध्य	"
यत्रका प्रमाण	८७३	उद्ग्रावचिकित्सा	८९३
महोपर लेपकी औषध	"	परिगादीकी चिकित्सा	८९४
अग्नौनाशक योग	८७४	मालकके भगदरका यत्न	"
अशकी चिकित्सा	८७५	दन्धनिमित्त उन्मार्गीकी चिकित्सा	८९५
पिप्पल्यादि क्षार	"	दात्रवेदनाकी क्षाति	"
पात्रादि जून अशोंपर	८७७	सुरक्षेपि	"
पंचमूत्रादि मत्राश अशोंपर	"	भगदरको उत्सादन	८९६
पिप्पल्यादि	"		"
पल्लवादि अशों के यत्न	८७८		

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
नासुर्धम विच्छेदा	८१७	कुण्डलिनोर्ध्वपर कृत्वा	११३
अंग रताशु त्व	"	अथ दशमोऽध्यायः १०	
" " यमोष्णदिग्ध	"	महाकुष्ठनिर्विकृतका व्याकरण	१११
" " निद्रादि तैल	८१८	कुष्ठ तथा प्रमेदका चिकित्सा	११४
भगदस्वत	"	कुष्ठ रोगपर सात्वतादि वृत्तयः	"
भगद(धे) पुष्प	"	कुष्ठप्रसङ्गपर भस्माग्राह्य	११५
अथ नवमोऽध्यायः ९.		कुष्ठनागक क्षीर	"
कुष्ठनिर्विकृतका व्याख्या	"	कुष्ठनागक अमृत	"
कुष्ठमेगका हेतु	८१९	कुष्ठम सुरा	११६
कुष्ठमेगपर पथ्यायः	"	कुष्ठम रुचरे,	"
कुष्ठकी चिकित्साका मूल	९००	कुष्ठपर पृथग्प्रयोग	११७
कुष्ठकुण्डलिकर्ष चिकित्सा	९०१	लोदका विधान	"
मिस्तद्वृद्धी चिकित्सा	"	लोदका दूत विधान	११८
सप्त जालिके कुष्ठपर भिन्नानि आदिना पुन या	"	लोदका तं वरा विधान	११९
तल	"	गदिरका विधान	"
न्यायिष्ठक पुन मः कुष्ठपर	"	गदिरका विधान	१२०
तिष्ठत पुन	९०२	कुष्ठविनादि न्यायी विधि	"
कुष्ठनागक प्रमेय	"	अथैकादशोऽध्यायः ११	
कुष्ठपर उशान्निक (मर्षा) आदिके	"	प्रमेहविनिर्गमक व्याकरण	१२१
काश्या लेव	९०३	प्रमेहका रसत	"
धिप व द्दुषी चिकित्सा	"	प्रमेहमे पुष्प	१२२
धिगपर त्मादि कषाध अंश तैल	९०४	पथ	"
दिग्धपर कुष्ठ सवरी कर्तनी आदि योग	९०५	प्रमापिचिकित्सा	१२३
धिगपर गोलिना, हार २५ कषाय, पुन,	"	प्रमेहनाशक छात्राद्य योग	"
तैल द्रव्यादि बहुत्र योग	"	कुष्ठप्रमेहोदके मूल	१२४
कुष्ठपर नीचद्वय	९०७	शिप्रमेहोदके चिकित्सा	"
" " महानीचद्वय	"	चिकित्साप्रमेहोदके चिकित्सा	१२५
न्यायिष्ठक गोमूत्र आदि उपाय	९०८	प्रमेहपर अल्प दिग्ध	"
इत उप योगे अमृत उ हानपर शिराशेष रक्त	"	प्रमेहका व्याख्या	१२६
विशतना समन, शिराशेष नश्य आदि	"	प्रमेहका भस्माग्राह्य	"
उपाय	"	धर्मन, मर्षा, महापथ्या चिकित्सा	"
कुष्ठमेगपर दूत मूल	९०९	हृत्पर सान्द्रन आदिना शिप्र	"
" " शिप्रका कष	९१०	निष्ठा तोषोदके वरी व्याख्या	१२७
कुष्ठमेगका अंश योग	"	अथ द्वादशोऽध्यायः १२	
मर्षा पुन अंश	"	प्रमापिचिकित्सा व्याकरण	१२८
महापथ्या	९११	प्रमापिचिकित्सा चिकित्सा	"
मर्षा	"	प्रमापिचिकित्सा व्याख्या	१२९
गदिरका व्याख्या	९१२	अथ द्वादशोऽध्यायः १२	१३०

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
अग्नेह्वर शालसारादि कषाय	९३०	उदररोगपर हितकारी अनेक उपचार	९४७
नवायस लोह	९३१	अथ पचदशोऽध्यायः १५	
रोह आसवकी विधि	"	मूटगर्भचिकित्सितका व्याख्यान	९४८
अग्नेह्वरकके लक्षण	९३२	मूटगर्भकी वृद्धिनाता	"
अथ त्रयोदशोऽध्यायः १३		मूटगर्भ जीता निकालना चाहिये	९४९
अग्नेह्वरचिकित्सितका व्याख्यान	९३३	मूटगर्भ निकालनेमें मात्र	"
अग्नेह्वरकी चिकित्सा और शिलाजीतरी	"	गर्भसेधमें औषध	९५०
प्रधानता	"	गर्भसे जीवित वा मृत बालकके निकालनेकी	"
उत्तम शिलाजीतके लक्षण	९३४	विधि	"
शिलाजीतकी सेवनविधि	"	जीवित गर्भमें शस्त्रका निषेध	९५१
शिलाजीतके गुण	९३५	मृत गर्भका छेदन प्रकार	"
तापी नदीमें उपरम सुवर्ण व रूप्य माक्षिका	"	छात्री रक्षा	"
उपयोग कई रोगोंपर शिलाजीतके सट्टा	"	मृतगर्भमें बिलयका दोष	९५२
उरनेका उपदेश	"	अपराके निकालनेका यत्न	"
गुरुरक वक्ष	"	गर्भ निकालनेके उत्तर क्रिया	"
गुरुरक कष साध्य करनेका मात्र	९३७	सूतिकाका उपचार पापलादि क्षाय पौरुह	९५३
गुरुरक वक्षका उपचार	"	पुद्ग होनेपर यथेष्ट आहारदिक्की धाना	९५४
दूसरा उपचार	"	बलातिल	"
तीसरा उपचार	"	बलातिलके गुण	९५५
अथ चतुर्दशोऽध्यायः १४.		बलादि क्षायकी विधि	"
उदरचिकित्सितका व्याख्यान	९३८	अतिबलादि तैल क्षाय आदि	९५६
उदररोगमें पथ्यापथ्य	९३९	अथ षोडशोऽध्यायः १६	
मासोदरचिकित्सा	"	विशेषिके चिकित्सितका व्याख्यान	९५६
पित्तोदरचिकित्सा	"	मातृविशेषिके आरभिक यत्न	"
कफोदरचिकित्सा	९४०	पथ्यमूलादि क्षाय तैल आदि उपाय	"
मूयोदरका यत्न	"	पित्तविशेषिके यत्न	"
सब उदररोगोंका मूत्रकारण	९४१	पित्तविशेषिके निशोष आदिका चूण, क्षाय,	"
उदररोगोंपर सामान्य प्रयोग	"	पूतका उपचार	९५८
उदररोगोंपर हरीतक्यादि पूत	९४२	करजाघपूत	"
शब्दादिपूत	"	करजादि पूतके गुण	९५९
आगद्वर्ति	९४३	करजादिपूतका यत्न	"
पलर्ति	९४४	रक्तविशेषिके और आगद्वर्ति विशेषिके यत्न	९६०
पित्तोदरमें फल खोलनेकी विधि	९४५	रक्तविशेषिके यत्न	"
परतन अनंतर अनेक उपचार	"	विशेषिके निशोष आदि उपचार	९६१
पुष्पपूत	९४६	गन्धके निशोषिके यत्न	९६२
पुष्पपूतका यत्न	९४६	अथ सप्तदशोऽध्यायः १७	
पुष्पपूतका यत्न	९४६	विशेषिके, गन्ध, स्त्रुत रोगके निशोषिके यत्न	९६३
पुष्पपूतका यत्न	९४६		

विषय	पृष्ठंक	विषय	पृष्ठंक
वातविषयका यन्त्र	१६३	परिचिन्तने चरमाणका यन्त्र भाग-१०८	
विन्निवृत्तका यन्त्र		मन्त्राणाम्	१६३
विषयपर गोष्ठादिहस्त	१६४	अथैकोनविंशोऽध्यायः १९.	
गोष्ठादि पृष्ठके गुण		हृदि, पित्त, श्मीर, विभिन्नितका चरमाण	१६३
कनक विषयका यन्त्र	१६५	अग्न्युद्दिने कश्चित् दाशर विचार	३
विषयपर सानान्य दिव्या	"	वातक अग्न्युद्दिना यन्त्र	"
नाडीमण (नासुर) धी विभिन्ना	"	विषय का हृदि	१६४
वातगर्भकम्	"	रक्तक अग्न्युद्दि	"
पैतृक नाडीमण	१६६	अपान अग्न्युद्दि	१६५
श्लेष्मिक नाडीमण	"	मदोन अग्न्युद्दि	"
वायुविषय नाडीमण	१६७	मूत्रक अग्न्युद्दि	"
हृत्, कुम्भ, उरुधे क नाडीमण हेनमें यन्त्र	१६८	अपान अग्न्युद्दि	१६६
अग्न्युद्दिने दाशरमूत्रका यन्त्र	"	उपश्रवविहिता	१६७
यतिविषय	"	वातोरुदाविहिता	"
वातगर्भक अन्व यन्त्र	१६९	पित्तावदा	"
नाडीमणपर विभिन्नकादि सैन	"	कन्धोवदा	१६८
सामसोमोपविहिता	१७०	परिचिन्तने विषय भागउत्तरा विहिता भाग	
सामसोमक उन्मत्त होये कर्णवदा यन्त्र	१७१	अथशठे मन्त्राणाम्	१६९
सामसोमक पश्चिउ भागविहिता मन्त्राणाम्	"	श्लेष्मक भाग विहिता	१७१
अथाष्टादशोऽध्यायः १८		वातगर्भक	"
प्रथि, कनकी, क्षुद्र, वातगर्भके विभिन्न-		विषय विद	"
तका व्याकरण	१७२	कन कीद	१७३
प्रथिगर्भके आणिक यन्त्र	१७३	अपानके अन्व यन्त्र	"
वातगर्भके विहिता	"	अपानके वातगर्भके वादिश क्षार, वायु,	
विषय प्रथिगर्भक यन्त्र	"	हेनका उन्मत्त	१७३
वातगर्भके यन्त्र	१७४	अथ विंशतितमोऽध्यायः २०.	
वातगर्भके यन्त्र	१७५	धुसराविहिता यन्त्र	१७४
वातगर्भके यन्त्र	"	अपानविहिता यन्त्र	"
वातगर्भके यन्त्र	१७६	आपानके अन्व विहिता	"
वातगर्भके यन्त्र	१७७	विषयविहिता यन्त्र	"
वातगर्भके यन्त्र	"	विषय अन्व विहिता यन्त्र	१७५
वातगर्भके यन्त्र	१७८	विषयविहिता यन्त्र	"
वातगर्भके यन्त्र	१७९	वातगर्भके यन्त्र-विषय विहिता यन्त्र-विहिता	१७६
वातगर्भके यन्त्र	१८०	वातगर्भके यन्त्र-विहिता यन्त्र-विहिता	"
वातगर्भके यन्त्र	"	वातगर्भके यन्त्र-विहिता यन्त्र-विहिता	१७७
वातगर्भके यन्त्र	१८१	वातगर्भके यन्त्र-विहिता यन्त्र-विहिता	"
वातगर्भके यन्त्र	१८२	वातगर्भके यन्त्र-विहिता यन्त्र-विहिता	१७८

विषय	पृष्ठांक	विषय,	पृष्ठांक
यौवनपिडिका-पद्मिनी-कटुक-चिकित्सा	"	तालुद्वेगोंकी चिकित्सा-गलेगुडी	१०१३
पारिवर्तिका-श्वपाटिका-चिकित्सा	९९२	मुडिकेरी आदिका यत्न	१०१४
निरुद्धप्रकाशचिकित्सा	"	तालुपाक	"
सनिरुद्धगुद-बल्मीक-भूमिरोहिणी-चिकित्सा	१०००	कण्ठरोगोंकी चिकित्सा-रोहिणी	"
बल्मीककी विशेष चिकित्सा	"	कण्ठशालग्रयत्न	१०१५
बल्मीककी चौरना, क्षार लगाना और चमे	"	अभिजिह्वा और एकगुद	"
ह्यादि तैलका यत्न	१००१	गिलायु और गलविप्रधि	"
अहिपूतनक-गुपणकच्छु-चिकित्सा	"	सर्वमुखगत वातजरोम	१०१६
गुदभ्रशका यत्न	१००२	पित्तज सर्वमुखरोग	"
अथैकविंशोऽध्यायः २१		कफज सर्वमुखरोग	"
द्व्यकुरोगचिकित्सितका व्याख्यान	१००२	मुखरोगमें साधारण यत्न	१०१७
सर्पेपिका-अष्टीलिका-प्रथित-वि०	१००३	असाध्य मुखरोगोंकी सख्या	"
कुम्भीका-अलजी-मृदित-वि०	"	अथ त्रयोविंशोऽध्यायः २३.	
समूहपिडिका-भवमय-पुष्करिका-वि०	१००४	शोफचिकित्सितका व्याख्यान	१०१८
स्पर्शहानि-उत्तमा-शतपोनक-त्वक्पाक	"	सर्वांगशोथ	"
शोणितगुद-चिकित्सा	"	शोथका हेतु	"
शूद्ररोगमें कर्तव्य	१००५	वातादिजनित शोथके लक्षण	१०१९
अथ द्वाविंशतितमोऽध्यायः २२		विषज शोथ	"
मुखरोगके चिकित्सितका व्याख्यान	१००५	स्यानभेदसे शोथकारक शोथ	१०२०
बायुज ओष्ठकोपकी चिकित्सा	"	शोथकी कटसाध्यता और असाध्यता	"
पित्तज ओष्ठकोपकी वि०	१००६	शोथरोगमें पथ्य	"
कफके ओष्ठकोपकी चिकित्सा	"	वातजादिशोथोंकी चिकित्सा	१०२१
मेदोज ओष्ठकोपकी चिकित्सा	"	शोथकी सामान्य चिकित्सा	"
दतमूलके रोग शीतादका यत्न	१००७	शोथपर देवदारुादि उपचार	१०२२
दतपुष्पुद और दतवेष्टकका यत्न	"	दूधरा जवाखारादि उपचार	"
शोथितयत्न	"	शोथमें पथ्यापथ्य	१०२३
परिदर और उपकुशका यत्न	१००८	अथ चतुर्विंशोऽध्यायः २४.	
दतवेदने और अधिदतका यत्न	"	अनागतपापाम्रतिपेधनीय (विना आये हुए	
अभिमासका यत्न	१००९	रोगके रोकनेके यत्नावके) चिकित्सितपा	
दतनाडीका विशेष यत्न	"	व्याख्या	१०२३
दतरोगचिकित्सा-दतद्वय-शर्करा	"	दिनपथा	१०२४
कापालिका	१०१०	परिशिष्ट	"
श्मिदन और द्युमोक्ष	१०११	मलेरुमर्गविधि	"
दतरोगमें पथ्य	"	मलादि वेग रोकनेमें दोष	१०२५
जिह्वाके वातज और पित्तज कटक रोगका	"	दण्डाटविधि	"
यत्न	१०१०	दनेनमें प्रयत्न इत्यादि	"
कटक	"	दरीनके गुण	१०२६
उपभिक्षाका यत्न	"	दन्तधावनका विधि	"

विषय	पृष्ठंक	विषय	पृष्ठंक
वातविषयका यन्त्र	१६३	परिचितमें मन्त्रालका का भाष्यसहित	१६३
विमविषयका यन्त्र	१	मन्त्रालका	१६३
विमवर गोप्यादिष्टत	१६४	अथैकोनविंशोऽध्यायः १९	
गोप्यादि घृतके गुण	"	वृद्धि, उपरत, श्रीपद विधिविषयका व्याख्यान	१६३
कनक विमयका यन्त्र	१६५	अष्टादिने पश्चिम आहार विहार	१६३
विमयकी सामान्य विद्या	"	वातज अष्टादिष्टा यन्त्र	"
नाडीनग (नामूर) की चिकित्सा	"	पित्तज अष्टादि	१६४
पातनादीयन	"	रक्तज अष्टादि	"
पैतृक नाडीनग	१६६	अध्मज अष्टादि	१६५
पैतृक नाडीनग	"	मदाज अष्टादि	"
शान्यपुत्रि नाडीनग	१६७	मूत्रज अष्टादि	"
कृश, सुर्वल, उपरतके नाडीनग दोनमें का	१६८	अध्मज अष्टादि	१६६
अष्टादिने शालयुद्धका यन्त्र	"	उपपन्नविषयका	१६७
यतिविधान	"	पश्चात्पदविषयका	"
नाडीनगके अन्य यन्त्र	१६९	पित्तोपद	"
नाडीनगके विमरीतादि १९	"	कफोपद	१६८
हृत्प्राणनिश्चिता	१७०	परिचितमें विषय आतसकरी विधि, का १९	
हृत्प्राणक उत्पन्न होना के लक्षणका यन्त्र	१७१	प्रकाशके मन्त्रालका	१७०
हृत्प्राणका परिचित भाष्यविषय का युगल		श्रीपद का चिकित्सा	१७१
अथाष्टादशोऽध्यायः १८.		वातोपद	"
शोथ, अशरी, शर्बुद, मालमालके चिकित्सा		पित्तोपद	"
तथा व्याख्या	१७२	कफोपद	१७२
शोथोपमे आशुभिक यन्त्र	१७३	श्रीपदके अन्य यन्त्र	"
शोथोपमे चिकित्सा	"	श्रीपदमें वातान्तरि आदिष्टा का, का, का,	
पित्तज शोथका यन्त्र	"	तथा उपचार	१७३
कफज शोथका यन्त्र	१७४	अथ त्रिंशत्तितमोऽध्यायः २०	
मैदाजम के, का	१७५	शुद्धोपमे विमलका व्याख्यान	१७४
अशरीविषयका	"	अशरीविषयविषयका	"
अशरीपर नल १९	१७६	अशरी आदिशो चिकित्सा	"
अशरी (१७७) की चिकित्सा	"	विमलदिष्टा का	"
शर्बुद	"	विषय का १७७ के चिकित्सा	"
विमपु	"	विमरीताविषयका	"
कफ पु	"	कफोपद-कफ-विषयका-मन्त्रालका-विधि का	१७५
शर्बुद उपचार	१७९	कफोपद-अध्मज-विधि का	"
शर्बुद चिकित्सा	१८०	कफोपद-विधि का	"
शर्बुद-विधि का	"	कफोपद-विधि का	"
कफज मन्त्रालका का यन्त्र	१८१	मन्त्रालका-विधि का	"
कफज मन्त्रालका का यन्त्र	१८२	मन्त्रालका-विधि का	"

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
यौवनपिडिका-पद्मिनी-कटक-चिकित्सा	"	तालुरोगोंकी चिकित्सा-गलशुडी	१०१३
परिवर्तिका-अपपाटिका-चिकित्सा	९९९	तुडिकेरी आदिका यत्न	१०१४
निरुद्धप्रकाशचिकित्सा	"	तालुभाक	"
सनिरुद्धगुद-बल्मीक-अमिरोहिणी-चिकित्सा	१०००	कण्ठरोगोंकी चिकित्सा-रोहिणी	"
बल्मीककी विशेष चिकित्सा	"	कण्ठसालुकेयत्न	१०१५
बल्मीकको चीरना, क्षार लगाना और चमे	"	अभिजिह्वा और एकट्टद	"
ह्यादि तैलका यत्न	१००१	गिलायु और गलविद्रधि	"
अशिशूनगर-वृषणकच्छु-चिकित्सा	"	सर्वमुखगत वातजरोग	१०१६
गुदघ्नशका यत्न	१००२	पित्तज सर्वमुखरोग	"
अथैकविंशोऽध्यायः २१		कफज सर्वमुखरोग	"
झकरोगविकित्सितका व्याख्यान	१००२	मुखरोगोंमें साधारण यत्न	१०१७
सर्पिका-अष्टालिका-प्रथित-चि०	१००३	असाध्य मुखरोगोंकी सख्या	"
कुभीका-अलजी-मृदित-चि०	"	अथ त्रयोविंशोऽध्यायः २३.	
समुद्रपिडिका-अवमय-पुष्करिका-चि०	१००४	शोफचिकित्सितका व्याख्यान	१०१८
स्पर्शहानि-उत्तमा-शतपोनक-त्वक्पाक	"	सर्वांगशोथ	"
शोणितलुद-चिकित्सा	"	शोथका हेतु	"
शूकरोगोंमें कर्तव्य	१००५	वातादिजनित शोथके लक्षण	१०१९
अथ द्वाविंशतितमोऽध्यायः २२		विषय शोथ	"
मुखरोगक चिकित्सितका व्याख्यान	१००५	स्यानभेदसे शोषकारक दोष	१००
वायुज ओष्ठकोषकी चिकित्सा	"	शोथकी कष्टसाध्यता और असाध्यता	"
पित्तज ओष्ठकोषकी चि०	१००६	शोथरोगमें मध्य	"
कफके ओष्ठकोषकी चिकित्सा	"	वातजादिशोथोंकी चिकित्सा	१०२१
भेदोज ओष्ठकोषकी चिकित्सा	"	शोथकी सामान्य चिकित्सा	"
दंतमूलके रोग शीतादका यत्न	१००७	शोथपर देवदारवादि उपचार	१०२२
दंतपुष्प और दंतवैष्टक्य यत्न	"	दूधरा जवाखारादि उपचार	"
शोथिरयत्न	"	शायमें पथ्यापथ्य	१०२३
परिदर और उपजुसाध यत्न	१००८	अथ चतुर्विंशोऽध्यायः २४	
दंतवैदम और अपिदतका यत्न	"	अनागतवाधाप्रतिपघनीय (विना आये हुए	
अभिमांसका यत्न	१००९	रोगके रोकनेके यत्नापके) चिकित्सितप्र	
दंतमांसका विशेष चरा	"	व्याख्यान	१०२३
दंतरोगचिकित्सा-दंतहृष-शर्करा	"	दिनचय	१०२४
क्षपालिका	१०१०	परिशुष्ट	"
हृमिदत और हनुमोक्ष	१०११	मन्त्रोत्पन्नविधि	"
दंतरोगमें पथ	"	मल्लदि वेग रोकनेमें दोष	१०२५
जिह्वाके वातज और विषाज कटक रोगका	"	दंतकाष्ठविधि	"
यत्न	१०१	दंतोन्नेमें प्रयत्न	"
कफकटक	"	दंतोन्नेके गुण	१०२६
उपजिह्वाका यत्न	"	दंतपावनका विधि	"

विषय	पृष्ठंक	विषय	पृष्ठंक
पातविगणका यन्त्र	१६३	पथिगणने गणमात्राका यन्त्र भाष्यप्रकाशके	
वित्तविगणका यन्त्र	"	मन्त्रागुणर	१६३
विगणन गोप्यादिद्वय	१६४	अथैकोनविंशोऽध्यायः १९	
गोप्यादि धृनके गुण	"	वृद्धि, उपरस, शीतल चिकित्सितका व्याख्यान	१६३
कनक विगणका यन्त्र	१६५	अष्टादशदिमें पथित व्याख्यान विद्वान्	१६३
विगणकी सामान्य क्रिया	"	मानक अष्टादशका यन्त्र	"
गोपीन (नामूर) की चिकित्सा	"	वित्त अष्टादश	१६४
पातनाईमित्र	"	रक्त अष्टादश	"
पैतिक नाडीमग	१६६	श्लेष्म अष्टादश	१६५
श्लेष्म नाडीमग	"	मूत्र अष्टादश	"
श्लेष्म नाडीमग	१६७	मूत्र अष्टादश	"
वृद्ध, दुर्बल, उल्कोके नाडीमग होनेमें यन्त्र	१६८	अन्न अष्टादश	१६६
अष्टादशमें दारपुत्रका यन्त्र	"	उपरीकाचिकित्सा	१६७
पथिविगण	"	पाथोपराचिकित्सा	"
नाडीमगके अन्य यन्त्र	१६९	वित्तवृद्ध	"
नाडीमगके चिकित्साके तैल	"	कनकोपरा	१६८
रक्तगोपविगण	१७०	पथिविगणने कितन शाखाका चिकित्सा का	
श्लेष्मगोपके उपाय होनेमें व्याख्यान का	१७१	प्रकाशके मन्त्रागुणर	१७०
रक्तगोपका चिकित्सा भाष्यप्रकाशके मन्त्रागुणर	"	शरीर का चिकित्सा	१७१
अथ अष्टादशोऽध्यायः २०		पाथोपरा	"
ग्रंथ, अथर्वी, अष्टादश, मन्त्रागुणरके चिकित्सा		वित्तवृद्ध	"
पाथोपरा	१७२	कनकोपरा	१७२
पथिविगणमें आलोचन का	१७३	शरीरके अन्य यन्त्र	"
अष्टादशकी चिकित्सा	"	शरीरमें कानादकी आलोचन का, अथ,	
वित्तवृद्ध का यन्त्र	"	पाथोपरा	१७३
अष्टादशका यन्त्र	१७४	अथ विंशतितमोऽध्यायः २०	
श्लेष्मगोपका यन्त्र	"	शु पाथिविगणका यन्त्र का	१७४
श्लेष्मगोपका यन्त्र	"	अष्टादशकी चिकित्सा	"
श्लेष्मगोपका यन्त्र	१७५	अष्टादश अष्टादश चिकित्सा	"
अष्टादश (शरीर) के चिकित्सा	१७६	वित्तवृद्ध चिकित्सा	"
अष्टादश	"	वित्तवृद्ध का यन्त्र चिकित्सा	१७५
वित्तवृद्ध	१७७	वित्तवृद्ध का यन्त्र चिकित्सा	"
अष्टादश	"	वित्तवृद्ध का यन्त्र चिकित्सा	१७५
अष्टादश का यन्त्र	१७८	वित्तवृद्ध का यन्त्र चिकित्सा	"
अष्टादश का यन्त्र	"	वित्तवृद्ध का यन्त्र चिकित्सा	१७८
अष्टादश का यन्त्र	१७९	वित्तवृद्ध का यन्त्र चिकित्सा	"
अष्टादश का यन्त्र	"	वित्तवृद्ध का यन्त्र चिकित्सा	१७९
अष्टादश का यन्त्र	१८०	वित्तवृद्ध का यन्त्र चिकित्सा	"
अष्टादश का यन्त्र	"	वित्तवृद्ध का यन्त्र चिकित्सा	१८०
अष्टादश का यन्त्र	१८१	वित्तवृद्ध का यन्त्र चिकित्सा	"
अष्टादश का यन्त्र	"	वित्तवृद्ध का यन्त्र चिकित्सा	१८१

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
यौवनपिठिका—पद्मिनी—कटक—चिकित्सा	"	तालुरोगोंकी चिकित्सा—गलशुडी	१०१३
परिवर्त्तिका—अवपाटिका—चिकित्सा	९९९	बुडिकेरी आदिका यत्न	१०१४
निरुद्धप्रवाशचिकित्सा	"	ताउपाक	"
सनिहृद्युद—बल्मीक—अमिरोहिणी—चिकित्सा	१०००	कण्ठरोगोंकी चिकित्सा—रोहिणी	"
बल्मीककी विशेष चिकित्सा	"	कण्ठशालकयत्न	१०१५
बल्मीकको चीरना, क्षार लगाना और चमे		अधिशिङ्गा और एकबुद	"
स्यादि तैलका यत्न	१००१	गिलायु और गलविद्रधि	"
भीष्टपूतनक—शुषणकच्छु—चिकित्सा	"	सबमुखगत यातजरोग	१०१६
युद्धप्रशाका यत्न	१००२	पित्तज सबमुखरोग	"
अथैकाविंशोऽध्यायः २१		कफज सर्वमुखरोग	"
शूक्ररोगचिकित्सितका व्याख्यान	१००२	मुखरोगोंमें साधारण यत्न	१०१७
सर्पपिका—अष्टौलिका—प्रथित—चि०	१००३	असाध्य मुखरोगोंकी सहाय	"
कुभीका—अलजी—गृधित—चि०	"	अथ त्रयोविंशोऽध्यायः २३	
सामूठपिठिका—अवमय—पुष्करिका—चि०	१००४	शोफचिकित्सितका व्याख्यान	१०१८
स्पर्शदानि—उत्तमा—शतपोनक—त्वक्स्पाक		सर्वांगशोध	"
शोणितायुद—चिकित्सा	"	शोधका हेतु	"
शूक्ररोगमें कर्तव्य	१००५	वातादिजनित शोधके रक्षण	१०१९
अथ द्वाविंशतितमोऽध्यायः २२		विपज शोथ	"
मुखरोगक चिकित्सितका व्याख्यान	१००५	स्थानभेदसे शोथकारक दोष	१०२०
वायुज ओष्ठकोपकी चिकित्सा	"	शोथकी कटसाध्यता और असाध्यता	"
पित्तज ओष्ठकोपकी चि०	१००६	शोथरोगमें पथ्य	"
कफके ओष्ठकोपकी चिकित्सा	"	वातजादिशोथोंकी चिकित्सा	१०२१
मेदोज ओष्ठकोपकी चिकित्सा	"	शोथकी सामान्य चिकित्सा	"
दन्तमूलके रोग शीतादका यत्न	१००७	शोथपर देवदारुदि उपचार	१०२२
दन्तपुष्प और दन्तवेष्टका यत्न	"	दूधरा जवाबारादि उपचार	"
शोथिरयत्न	"	शोथम पथ्यापथ्य	१०२३
परिदर और उपपुशका यत्न	१००८	अथ चतुर्विंशोऽध्यायः २४	
दन्तवैदर्भ और अधिदन्तका यत्न	"	अनागतबाधाप्रतिपेघनीय (विना आये हुए	
अभिमांसाका यत्न	१००९	रोगके रोकनेके यत्नावके) चिकित्सित	
दन्तनाडीका विशेष यत्न	"	व्याख्यान	१०२३
दन्तरोगचिकित्सा—दन्तद्वय—दन्तका		दिनचया	१०२४
कापालिका	१०१०	परिशिष्ट	"
इमिदन और हनुमोक्ष	१०११	मलेत्सर्गविधि	"
दन्तरोगों पथ्य	"	मलादि वेग रोकनेमें दोष	१०२५
जिह्वाके वातज और पित्तज कटक रोगका		दन्तकटविधि	"
यत्न	१०१२	दन्तनमें प्रचल दृष्ट	"
कफकटक	"	दन्तनके गुण	१०२६
उपशिङ्गाका यत्न	"	दन्तधावनका विधेय	"

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
निद्रामन्दरा	१०२०	भूयः कृत्वा धीरः शिवायः कृत्वा	१०४१
सुषुप्तशालन	"	कामोदा शिबे गुण	"
नेमिका	१०२८	पशुपति (शिबेरिमें आगेहके गुण)	"
शत्रुनाश विषय	"	सदृशता उदय	१०२०
साधुभक्षण	"	शान्त चक्षुः, ऊर्ध्वे निद्रा हुआ चक्षुः	"
पशुपति-साधुभक्षणे गुणवर्णन	१०२९	हृष्य, विषय कृष्णमें आता, गुण कृष्ण,	"
साधुभक्षण विषय	"	राधा आदि उदय मन्त्री कर्म इत्यादि	"
शिवमें शैतल्यमानके गुण	१०३०	प्राकृतार्थ वृत्त्य म कर्मता ..	"
कर्म करण और कर्मकृता	"	मोक्षार्थ म कर्मता, प्राम, नगर, देशाचार्य,	"
स्नेहाभ्यग और शैतल्य मानेदावगाहन	"	अत्राचार्य आदि कर्मता मन्त्री	"
स्नेहाभ्यग विषय	१०३१	एव मन्त्री निवेद इत्यादि ..	१०४३
स्नेहाभ्यग कर्मके गुण	१०३२	श्रीमद्गुण्य निवेद	१०४८
शिव धनस्यापक भ्यापाम करना	"	मुनेये मन्त्रिकके गुण और ज्ञान	१०४९
प्रादिक कृष्ण और कर्म विषय	१०३३		
अथ भ्यापामके दोष	"	अथ पंचविंशतितमोऽध्यायः २५,	
भ्यापामक विषय	१०३४	मि शिवि मन्त्रिक कर्मता म ..	१०४२
उपपन्न कर्मके गुण	"	कर्मताके दोष ..	"
उदय और उदयदनक गुण	"	परिप्रेक्ष	"
द्वयं और द्वयं कर्मके गुण	"	उदय ..	१०४३
द्वयं के गुण	१०३५	उदय कर्मता कृष्णजन	"
उदयदर और शीतोदरक स्नान कर्म	"	परिप्रेक्ष	"
कर्मता	"	कर्मताके दोष विवेचना	१०४४
स्नान विषय	"	कर्मता विवेचना	"
अनुप्रेक्ष गुण	१०३६	लीला विवेचना	"
परिप्रेक्ष	"	भाषा विवेचना	१०४५
उदय कर्म और कर्मके भाग दुनक कर्म	"	कर्मता विवेचना	"
विषयका भाग कर्मता	"	कर्मताके दोष	१०४६
अथ शिव		लीला विवेचना	१०४८
शिवके गुण	१०३७	अथ पञ्चविंशतितमोऽध्यायः २६,	
शिवके गुण	"	कर्मताके दोष और कर्मताके विवेचना	"
कर्मताके गुण	१०३८	कर्मताके दोष	१०४९
शिवके गुण	"	कर्मताके दोष	"
कर्मताके गुण	"	कर्मताके दोष	"
कर्मताके गुण	१०३९	कर्मताके दोष	"
कर्मताके गुण	"	कर्मताके दोष	"
कर्मताके गुण	"	कर्मताके दोष	"
कर्मताके गुण	"	कर्मताके दोष	"
कर्मताके गुण	"	कर्मताके दोष	"
कर्मताके गुण	१०४०	कर्मताके दोष	"
कर्मताके गुण	"	कर्मताके दोष	"

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
चौथे प्रकारकी नपुंसकता	१०६१	सोम नामक औषधिका गुण	१०७९
पाँचवें प्रकारकी "	"	सोमके भेद	"
छठे प्रकारकी "	"	सोमके २४ भेद	१०८०
वाजीकरण प्रयोग	१०६२	सोमपानकी विधि	"
वाजीकरणका दूसरा प्रयोग	"	सोमपानके अनंतर कर्तव्य विधि	१०८१
तीसरा प्रयोग	१०६३	सोमपानके अनंतर चौथे दिनमें कर्तव्य विधि	१०८२
चतुर्थ प्रयोग	"	अष्टम दिनकृत्य	"
पाचवाँ प्रयोग	"	सप्तदशदिनकृत्य	१०८३
पादाभ्यगसे स्तम्भन	१०६४	पचविंशति दिनके अनंतर कर्तव्य पद्यापध्य	"
अन्य वाजीकरण योग	"	सोमविधानका फल	१०८४
वाजीकरणमें गुप्तफलादि कपाय	१०६५	सोमलताके रक्षण	१०८६
अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७		विशेष सोमके रक्षण	"
अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७		सोमकी उत्पत्तिके स्थान	१०८७
अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७		अथ त्रिशत्तमोऽध्यायः ३०	
व्याख्यान करते हैं	१०६६	निम्नतः सत्तापनीय रसायनका व्याख्यान	१०८८
रसायन विधिमा उपयोग	"	सात पुरुषोंको रसायनका उपयोग नह।	"
साधारण रसायन योग	१०६७	करना चाहिये	"
विहगरसायन	"	रसायनकी औषधियाँ	"
विहगकी उत्कृष्ट विधि	"	अनगरी आदिके सेवनका फल	१०९०
नलादिरसायनविधि	१०६९	अजगर्भादि औषधोंके स्वरूप	"
गाराही कदका रसायन	१०७०	अथैकत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३१	
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		स्नेहोषधीगिष चिकित्सितका व्याख्यान	१०९६
मेधायुष्कामीय रसायनका व्याख्या	१०७०	स्नेहके गुण	"
यादुचीका प्रयोग	"	स्नेहक उत्पत्तिस्थान	"
शुष्ट, पांडुरोग, उदररोग इनपरसी यादुचीका	"	स्वावर स्नेहका उपदेग	"
प्रयोग प्रशस्त है	"	तिल्यकादि स्नेह	१०९६
मशूकपर्णीक प्रयोग	१०७३	फरजादि स्नेह	"
मालात्रे प्रयोग	१०७४	साठनारियलादि स्नेह	१०९७
मालात्रिका दूसरा प्रयोग	"	कपाय, स्नेह, पाषाणके क्रमसे उपदेग	"
मक्के प्रयोग	१०७५	मान (तोल) की परिमाणा	१०९८
अन्य प्रकीर्ण प्रयोग	१०७६	धननारिजाके मतों काय और स्नेहपाकविधि	"
पित्वादि काय	१०७७	तीन भौतिका स्नेहपाक	११००
कमलके नडका काय	"	स्नेहपाककी परीक्षा	"
गुचादिप्रयोग	"	स्नेहपानकी विधि	"
गुणापरिणत	"	गन्धन और तेरपाकके योग से रोगी	११०१
अथैकोनत्रिंशोऽध्यायः २९		गंगा और मन्मथके योग	"
स्वभावाभाविप्रतिषेधनीय रसायनका रसायन	१०७८	मेथोड अनुसार स्नेहपाक	"

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
चौथे प्रकारकी नपुसक्ता	१०६१	सोम नामक औषधिका गुण	१०७९
पाचवें प्रकारकी "	"	सोमके भेद	"
छठे प्रकारकी "	"	सोमके २४ भेद	१०८०
बाजीकरण प्रयोग	१०६२	सोमपानकी विधि	"
बाजीकरणका दूसरा प्रयोग	"	सोमपानके अनंतर कर्तव्य विधि	१०८१
तीसरा प्रयोग	१०६३	सोमपानके अनंतर चौथे दिनमें कर्तव्य विधि	१०८२
चतुर्थ प्रयोग	"	अष्टम दिनकृत्य	"
पांचवां प्रयोग	"	सप्तदशदिनकृत्य	१०८३
पादाभ्यगसे स्तन	१०६४	पचविंशति दिनके अनंतर कर्तव्य पद्यापध	"
अन्य बाजीकरण योग	"	सोमविधानका फल	१०८५
बाजीकरणमें गुप्तफलादि कपाय	१०६५	सोमरुताके लक्षण	१०८६
अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७		विशेष सोमके लक्षण	"
अथ सर्वाविधानसामनीय रसायन तत्प्रका		सोमकी उत्पत्तिस्थान	१०८७
व्याख्यान करते हैं	१०६६	अथ त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३०	
रसायन विधिदिता उपयोग	"	निवृत्त सतापनीय रसायनका व्याख्यान	१०८८
साधारण रसायन योग	१०६७	सात पुरुषोंको रसायनका उपयोग नहीं	
विडगरसायन	"	करना चाहिये	"
विडगकी उत्कृष्ट विधि	"	रसायनकी औषधियां	"
नलादिरसायनविधि	१०६९	अजगरी आदिके सेवनका फल	१०९०
गाराही कदका रसायन	१०७०	अजगरीदि औषधियोंके स्वरूप	"
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		अथैकत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३१	
मेधापुष्कामीय रसायनका व्याख्यान	१०७१	स्नेहोपयौगिष चिकित्सितका व्याख्यान	१०९६
वायुनीका प्रयोग	"	स्नेहके गुण	"
कुष्ठ पांडुरोग, उदररोग अनपरीय वायुचीका	"	स्नेहके उत्पत्तिस्थान	"
प्रयोग प्रशस्त है	"	स्वप्न स्नेहका उपदेश	"
गुह्यकपर्णिके प्रयोग	१०७३	तिन्वकादि स्नेह	१०९६
प्राज्ञाके प्रयोग	१०७४	फरजादि स्नेह	"
प्राज्ञाका दूसरा प्रयोग	"	ताटनारियलादि स्नेह	१०९७
पचके प्रयोग	१०७५	पपाय, स्नेह, पाचके क्रमका उपदेश	"
अन्य प्रकीर्ण प्रयोग	१०७६	मान (ताल) की परिभाषा	१०९८
वित्वादि ण्य	१०७७	घननारिजके मतमें ण्य और स्नेहका भेद	"
फलके जट्टा ण्य	"	मान में निश्चय स्नेहका	११००
गन्धादि ण्य	"	स्नेहपचका परीक्षा	"
शतावरीण्य	"	स्नेहपानकी विधि	"
अथैकोनत्रिंशोऽध्यायः २९		घृतपन और तैलपनके योग्य रोगी	११०१
रसायनका प्रयोग		गन्ध और मद्योके म म्य	"
रसायन	१०७९	दोषोंके अनुसार स्नेहका	"

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
चौथे प्रकारकी नपुंसकता	१०६१	सोम नामक औषधिका गुण	१०७९
पौचधे प्रकारकी "	"	सोमके भेद	"
छठे प्रकारकी "	"	सोमके २४ भेद	१०८०
वाजीकरण प्रयोग	१०६२	सोमपानकी विधि	"
वाजीकरणका दूसरा प्रयोग	"	सोमपानके अनंतर कर्तव्य विधि	१०८१
तीसरा प्रयोग	१०६३	सोमपानके अनंतर चौथे दिनमें कर्तव्य विधि	१०८२
चतुर्थ प्रयोग	"	अष्टम दिनकृत्य	"
पौचवो प्रयोग	"	सप्तदशदिनकृत्य	१०८३
पादाभ्यगमे स्तनन	१०६४	पञ्चविंशति दिनके अनंतर कर्तव्य पद्यापथ्य	"
अन्य वाजीकरण योग	"	सोमविधानका फल	१०८५
वाजीकरणमें गुप्तफलादि कथाय	१०६५	सोमरुताके रक्षण	१०८६
अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७		विशेष सोमके रक्षण	"
अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७		सोमकी उत्पत्तिके स्थान	१०८७
अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७		अथ त्रिशत्तमोऽध्यायः ३०	
अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७		निश्चित सप्तापनीय रसायनका व्याख्यान	१०८८
अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७		सात पुरुषोंको रसायनका उपयोग नहीं	"
अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७		करना चाहिये	"
अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७		रसायनकी औषधिया	"
अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७		अजगरी आदिके सेवनका फल	१०९०
अथ सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७		अजगरीयादि औषधियोंके स्वरूप	"
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		अथैकविंशतितमोऽध्यायः ३१	
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		स्नेहोपयोगिक चिकित्सितका व्याख्यान	१०९५
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		स्नेहके गुण	"
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		स्नेहके उत्पत्तिस्थान	"
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		स्थावर स्नेहका उपदेश	"
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		तिलकादि स्नेह	१०९६
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		करजादि स्नेह	"
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		ताड़नारियलादि स्नेह	१०९७
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		कषाय, स्नेह, पाकके क्रमका उपदेश	"
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		मान (तोल) की परिभाषा	१०९८
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		भक्ष्यभोजनके मतमें कषाय और स्नेहपाकविधि	"
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		तीन भौतिकी स्नेहपाक	११००
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		स्नेहपाककी परीक्षा	"
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		स्नेहपाककी विधि	"
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		घृतपान और तैलपानके योग्य रोगी	११०१
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		गन्ध और मन्त्रोंके योग्य	"
अथाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८		दोषोंके अनुसार स्नेहपान	"

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
धमनके अधोगमनकी उपाधि	११३५	अयोगका लक्षण और यत्न	११६०
विरचनका लक्ष्यगमन	११३६	आध्मानका लक्षण और यत्न	"
सावशेष औषधकी उपाधि	"	परिकर्तिका और परिस्त्रावके लक्षण तथा यत्न	११६१
औषध जीर्ण होने (पचजाने) के अवगुण	११३७	प्रवाहिका और हृदयोपसरणके लक्षण तथा	"
स्वल्पदोषहरण	"	यत्न	"
वातशूल	११३८	अगप्रहका लक्षण और यत्न	११६२
औषधका अयोग	"	अतियोग और जीवादान	"
अतियोगके उपद्रव	११४०	धमन विरेचन और वस्तिमें दिनोंका अंतर	११६३
जीवादान उपाधिका यत्न	११४२	अथ सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७.	
रूपपित्त और जीवशोणितकी परीक्षा	"	अनुवासन वस्तिचिकित्सितका व्याख्यान	११६३
आध्मान	११४३	अनुवासनका समय और मात्रा	"
परिकर्तिका	"	वस्तियोग्य तैलोंका साधन	११६४
परिस्त्रावक लक्षण और यत्न	११४४	वस्तिकर्ममें शिक्षायोग्य घातें	११६५
प्रवाहिकाका " " "	"	रात्रिमें वस्तिकर्म निषेध	११७०
हृदयोपसरणका " " "	११४५	रात्रिमेंही वस्तिकी आशा	"
विवधका " " "	"	दिन और रात्रिमें वस्तिक नियम	"
अथ पचत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३६.		भोजनका नियम	११७१
नेत्रवस्तिप्रमाणप्रविभागचिकित्सितका व्याख्यान	११४६	न्यूनाधिक स्नेहवस्तिके दाप	११७३
वस्तिकर्मके योग्य रोगी	११४७	सम्यगनुवासितके लक्षण	"
नंत्र (नली) और मात्रादिका प्रमाण	११४८	वस्तिकर्मके उत्तर किया	"
वस्ति का चित्र	११५०	वस्तिके अंतरका समय	११७५
वस्ति दो प्रकारकी होती है	११५१	स्नेहवस्तिकी व्यापद्	"
अनुवासन वस्ति का वर्णन	"	घातादि दोषोंसे अभिभूत स्नेहके उपद्रव	"
वस्तिकर्मके अयोग्य मनुष्य	११५२	अप्राभिभूत स्नेहके उपद्रव	११७६
वस्तिकर्ममें विशेषता	"	अगुदके मलमिश्रित स्नेहके उपद्रव	"
वस्तिकी व्यापत्तियां प्रणिधानदोष और		दृगनुसृत स्नेहके दोष	"
नेत्रदोष	११५४	प्रवाहण	११७७
पल्लि और आपपीडनके दाप	"	मदानुसरण	"
इन्ध और दाप्याके दोष	"	स्नेहका उलट न शाना	"
अथ पचत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३६.		उत्तरवस्तिमें नेत्र और मात्राका प्रमाण	११७८
नेत्रवस्तिव्यापचिकित्सितका व्याख्यान	११५६	उत्तरवस्तिके योग्य वस्ति	११७९
नेत्रप्रणिधान दोषके लक्षण और यत्न	११५७	उत्तरवस्तिकर्मकी विधि	"
नेत्रदोषके लक्षण और यत्न	"	त्रिषोके उत्तरवस्ति देनेकी विधि	११८०
वस्तिदोषोंके लक्षण और यत्न	"	उत्तरवस्ति का स्नेह उत्पन्न न होने को किया	"
पीडनदोषके लक्षण और यत्न	"	वर्णविधाता	११८१
इन्ध (औषध) के दोष	११५८	उत्तरवस्तिके गुण	११८२
दाप्यादोषके लक्षण और यत्न	११५९	अथ अष्टात्रिंशत्तमोऽध्यायः ३८.	
		निष्पत्त उपक्रम चिकित्सितका व्याख्यान	११८३

[illegible]

अथ चत्वारिंशोऽध्यायः ४०.

गुप्त, राजा बलभद्र विजयिन्ना ३३३
देव-प्रसादी गुप्तजी बलिनी

सर्व-प्रकारकी शुद्धि, वनिदी

॥ श्रीः ॥

अथ सुश्रुतसंहिताकल्पस्थान- विषयाऽनुक्रमणिका ।



विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
अथ प्रथमोऽध्यायः १		स्वावरविषयके १० अधिष्ठान भेद	१२४३
अमपानरक्षाकल्पका व्याख्यान	१२०९	मूलविषय	"
विषसे रक्षाका विधान	"	पत्र, पल आर पुष्प विष	१२४४
राजाकी सावधानी	१ ३०	त्वक्सार, निर्यास, दुग्ध तथा धातुविष	"
योग्य वैद्यका विस्वास	"	कन्दविषय	१२४५
रसोदका स्थान	१२३१	भावसिध्दन्तीके गतानुसार नय जातिका विष	"
अध्यक्ष परिचारकादिक	"	और उनके नाम	"
विष देनेवालेकी परीक्षा	१२३२	विषोंक उपद्रव	"
विषके अधिष्ठान	१२३३	कन्दविषोंके उपद्रव	१२४६
विषयुक्त भोजनकी परीक्षा	"	निपमात्रके १० गुण	१२४७
परोसे हुए भोजनमें विषकी परीक्षा	१२३४	दस गुणोंके कार्य	"
प्रासमें विषपरीक्षा	१२३५	हान विष (दूषीविष)	१२४८
आमाशयगत विषके लक्षण और उद्ग	"	दूषीविषयुक्तके लक्षण	"
पक्वाशयगत विषके लक्षण और यज्ञ	१२३६	दूषीविषकोषके पूरूप और उपद्रव	१२४९
वेद्य पदार्थोंमें विषपरीक्षा	"	दूषीविषकी निरूपित	१२५०
शाकादिमें विषकी परीक्षा	"	स्वावरविषके ७ वेग	"
दूतों आदिमें विषकी परीक्षा	१२३७	सात वेगोंके चिह्न	१२५१
अभ्यंगगत विषके लक्षण और यज्ञ	"	विषम यवागू	"
अनुलेपनगत विषके लक्षण और यज्ञ	१२३८	अजय पुत्र	१ ५२
शिरोऽभ्यंग और मुष्पन्नेपगत विष	"	विषारि नामक अगद	"
सर्पारियोंकी पीठपर विष	१२३९	विषोपद्रव यत्न	१२५३
नस्य, धूम और पुष्पोंमें विषके लक्षण, यत्न	"	अथ तृतीयोऽध्यायः ३	
वर्णरोगोंमें विषके लक्षण, यत्न	१२४०	जगमविषविनाशाय अष्टावक्त्र व्याख्यान	१२५३
अंजनमें विषके लक्षण, यत्न	"	जगमविषके १६ अधिष्ठान	१२५४
विषम संज्ञित उपाय	१२४१	अधिष्ठान भेदमें विषसे जीवोंके नाम	"
" " दूधरा	१२४२	दिरदूषितनृपजरादिके आग	१२५५
" " तीसरा	"	जराके शोषनरा प्रकार	१२५६
रसवि विष गद्युपस्थित हुण्का यत्न	१२४३	विषरूपित दूषी	"
अथ द्वितीयोऽध्यायः २		विषयुक्तदूषी	१२५७
रसापरिष्विहानीय अष्टावक्त्र व्याख्यान	१२४३	विषम यवागू	"
विषके दो भेद	"	विषयुक्त दूषी और यवा तथा इनकी दृष्टि	१२५८
		विषकी दृष्टांति	"

[illegible]

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
उन्मत्त कुत्ते आदिम काटेहुएकी चिकित्सा	१२९८	कण्डूमको काटेनेमें यत्न	१३१५
विषक्षोपकरणविधि	१२९९	विच्छुओंके भेद	१३१६
तन्त्रविधि	१३००	मन्त्रविष विच्छुओंके भेद और तद्दोषप्रव.	"
स्नान और बलिप्रदानके लिये मन्त्र	"	मध्यविष विच्छुकी आहृति और लक्षण	१३१७
अथ सप्तमोऽध्यायः ७		तीक्ष्णविष विच्छुकी आहृति लक्षणादि	"
हुडुभिस्वनीय अध्यायका व्याख्यान	१३०१	विच्छुके काटेके यत्न	१३१८
क्षारागदविधि	"	क्षृताविषका वर्णन	१३१९
कल्याणघृतकी विधि	१३०३	क्षृताविषका प्राकट्य	१३२०
अमृताख्यघृतकी विधि	"	क्षृताविषकी अवधि	"
महासुगन्धि अगदकी विधि	"	सात प्रकारका क्षृताविष	१३२१
महासुगन्धि अगदके गुण	१३०५	सात प्रकारके विषदशके लक्षण	"
विषातुरके पथ्यापथ्य	"	क्षृताओंकी उत्पत्ति	१३२२
अथाष्टमोऽध्यायः ८.		साध्य क्षृताओंके भेद	"
कीटकस्पका व्याख्यान	१३०६	असाध्य क्षृताओंके भेद और तद्दोषप्रव	१३२३
सर्पोंके गुक, विष, मूत्र, देह, सङ्गनेसे और	"	क्षृताओंके पृथक् २ दशके लक्षण और यत्न	"
अङ्गसे सब कीटकीका उत्पन्न होना	"	त्रिमंडलाके दशके लक्षण और यत्न	"
अठारह प्रकारके वायवीय कृमि	"	चोताके दशके लक्षण और यत्न	१३२४
सर्वांस प्रकारके आमेय (पौष्टिक) कृमि	१३०७	कपिलाके दशकेलक्षण और यत्न	"
तेरह प्रकारके सौम्य (शैथिलिक) कृमि	"	पीतिकाके " "	"
बारह प्रकारके प्राणहर (सानिपातिक) कृमि	१३०८	अलविषाके " "	१३२५
नारके लक्षण	१३०९	मूत्रविषाके " "	"
एक जातिके कृमियोंके गण	१३१०	रक्तक्षृताके " "	"
कणभवे चार भेद	"	कसनाके " "	"
गोधरफ (गुहरे) के पांच भेद	"	असाध्य क्षृताओंके यत्न, कृष्णक्षृता	१३२६
गोहमे छ भेद	"	अमित्रवांके दशके लक्षण और यत्न	"
शतपदी (बनराजूरा) के आठ भेद	१३११	असाध्य क्षृताओंके दशके लक्षण	१३२७
विषयुक्त मंडवके आठ भेद	"	असाध्य क्षृताओंकी विधिभ्रमाके लिये आगा	१३२८
विषमरादलक्षण	"	क्षृतादशका छेदनप्रकार	"
आर्द्रदुष्कादिदलक्षण	१३१२	पान और सेवा	१३२९
पिपीलिकाके छ भेद और तद्दलक्षण	"	उपगद्दार	१३३०
मक्षिकाके छ भेद	"	आयुर्वेदकी उत्तमता	१३३१
मशक (मच्छर) के पांच भेद तद्दलक्षण	१३१३	टाटाकारका पूर्तिभोक्त	१३३२
अगाध्य कृमि	"	कल्पस्थान-परिशिष्ट भाग १.	
मेटफके दाग, मूत्र, विष्टाके अगमें लगनेमें	"	तन्त्रान्तरोक्तविषोपयोगी विधि	१३३३
होन पाछे उपश्रुत	"	विषके गुण (माघप्रकाशके मतानुसार)	"
वर्षादृष्टी चिकित्सा	१३१४	विषोके शोषनका रोग	१३३३
विच्छुके बचनेमें यत्न	"	विशोपपन्नविधि	"
विच्छुके बचनेमें कृत्रिम उपचार	"	विषकी मात्रा	१३३४

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
विषय विषय १११४	विषय विषय विषय १११५	
विषय विषय विषय	परिशिष्ट भाग २	
विषय विषय विषय विषय (विषय)	१११५	विषय विषय विषय विषय	१११५
विषय विषय	विषय विषय विषय विषय	१११५
विषय विषय	विषय विषय विषय विषय	१११५
विषय विषय विषय विषय	१११६	विषय विषय विषय विषय	१११६
विषय विषय विषय विषय	विषय विषय विषय विषय	१११६
विषय विषय विषय विषय	१११६	विषय विषय विषय विषय	१११६
विषय विषय विषय विषय	विषय विषय विषय विषय	१११६

इति मुश्रुतगद्दिनाकल्पस्यानविषयानुक्रमजिज्ञा समाप्ता ।

॥ श्रीः ॥

अथ सुश्रुतसंहिता ।

सान्वयभाषाटीकासहिता ।

चिकित्सितस्थानम् ४.

प्रथमोऽध्यायः १

अथातो द्विवर्णीयचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।

शरीररु स्थानके अनंतर अव चिकित्सितस्थानका प्रारम्भ करते हे उसमें प्रथम द्विवर्णीय अर्थात् दोनों प्रकारके शरीर ओर आगतुक वर्णोंकी चिकित्साका व्याख्यान करते हे ॥

दो प्रकारके वर्ण ।

द्वौ वर्णौ भवत शरीर आगतुकश्चेति । तयो शरीरः पवनपित्तकफशोणितसन्निपातनिमित्तः । आगतुरपि पुरुषपशुपक्षिव्यालसरीसृपप्रपतनपीडनप्रहारान्निक्षारविपतीक्ष्णौषधशकलकपालशृङ्गचक्रेपुपरशुशक्तिकुन्ताद्यायुधाभिघातनिमित्तः ॥ १ ॥

वर्ण दो प्रकारके होते हे एक शरीररु, दूसरे आगतुक । इनमेंसे जो वायु, पित्त, कफ, रुधिर तथा सन्निपातके कारण शरीरहीमेंसे उत्पन्न हो उसे शरीररु वर्ण कहते-हे । और जो मनुष्य, पशु (बेल, घोडे आदि), पक्षी (गिद्ध, शुक आदि), व्याल (सिंह, वृक आदि) तथा सरीसृप (सर्प, विच्छेद आदि) के आघात-चोट लगने, घाटने आदिसे तथा उच्चपरसे गिरने, दमजाने और लफ्फा आदिके प्रहारसे तथा अग्निके जलने, क्षार (तेजाव) लगनेसे, विषसे स्पर्शादिसे तथा तीक्ष्ण औषध (भिलावे आदि) के लगनेसे, शकल अर्थात् बांसकी पच्चट, पांचका टुकड़ा आदि

(पाक्य १) दो वर्णौ अभिरुच्य वृष्ट द्विवर्णीयम् । चिकित्सितविकारप्रतीकार । चर्मे स्नानप्रयोग आमुषगोशेन तथा रसादीनां च ॥ ५ ॥ आदिशब्देन एतद्वाच्यो मन्त्रा ॥

कपाट (ढंकरा मोपरो) सीन और चक्र (पहियेकी रगत), इशु (तीर) मया परशु (कृन्दाटा), शक्ति (बरछी) पुन (तोमर) आदि शस्त्रोंकी मोटा लकड़ीके कारणसे उत्पन्न हो उस आगंतुक वग कहन है ॥ १ ॥

तत्र तुल्ये व्रणमामान्ये द्विस्फारणोत्थानप्रयोजनसामर्थ्याद्विद्वशीय
इत्युच्यते ॥ २ ॥

व्रणमात्र मामान्यतासे तुल्य होनेवाली दो घावोंमें अन्य होने है इस प्रयोजनसे "द्विद्वशीय" ऐसा कहा जाता है ॥ २ ॥

आगतुक व्रणमें तान्त्रालिक विधि ।

सर्वस्मिन्नेवाऽगगतुत्रणे तत्कालमेव क्षनोष्मंग प्रमृत्तम्योपेक्षनार्थं
पित्तवच्छीतक्रियावधारणविधिर्विशेषः सधानार्थं च मधुघृतप्रयोग
इत्यंतद्विस्फारणोत्थानप्रयोजनमुत्तरकालं तु दोषोपपन्नविशेषाच्छा-
रीवत्प्रतीकार ॥ ३ ॥

सब प्रकारके आगतुक व्रणोंमें (आघात होनेवाले) तन्त्राल पायरी गरमीके व्रणोंकी शक्तिसे लिप पित्तकी शक्तिसे समान शीतल मिश्रित अथवा एक प्रकारका चिकित्साविधि है (अर्थात् ताने आगतुक धतुपर उसी समय ठंडा पानी डालना, भोगा कपाट लपेटना आदि दर्जित है) और पायरी भरनेके लिये शङ्ख और गुलाब तिलके पत्रों पर पट्ट दोनो प्रकारके व्रणोंमें योगना करसकते हैं और आगतुक व्रण भी अधिक दिनरा होनासे (पचनेसे, मढ़नेसे अच्छा न हो) तो फिर दोषोपेक्षे उत्पन्ननासे भेदमें आश्रित प्रत्येक समान विधिसे करनी चाहिये ॥ ३ ॥

प्रथम दोष भेद ।

दोषोपपन्नविशेष पुनः समासित पंचदशोपपन्नप्रकारेण प्रत्येकसामर्थ्या
व्यधोक्तो व्रणप्रज्ञाधिकारे ॥ ४ ॥

व्रणके सामान्य विशेष लक्षण ।

तस्य लक्षणं द्विविधं सामान्य वैशेषिकश्च तत्र सामान्यं रुक् ।
'व्रण' गात्रविचूर्णने । व्रणतीति व्रणः विशेषलक्षण पुनर्वातादि-
लिंगविशेषः ॥ ५ ॥

व्रणमात्रके लक्षण दो प्रकारके है सामान्य और विशेष । जिसमें सामान्य लक्षण तो पीड़ा होनाही है । 'व्रण' धातु गात्रके विचूर्णन अर्थमें है उसमें व्रण शब्द (क्षत-वाचक) बनता है इसके विशेष लक्षण वात-पित्त-कफ—हृथिर-धातपित्त-वात-कफ आदि भेदसे (एक एक दोषके तथा दो दो दोष मिलकर और तीन तीन दोष मिलकर तथा चारों दोष मिलकर) पद्वह प्रकारके अथवा शुद्ध व्रण महित १६ प्रकारके होते हैं जिन्हें जुदा जुदा वर्णन करते हैं ॥ ५ ॥

वातादिभेदसे १५ प्रकारके व्रणलक्षण ।

तत्र श्यावारुणाभस्तनुः शीतपिच्छलाल्पस्त्रावी रूक्षश्चटचटायन-
शीलः स्फुरणागमतोदभेदवेदनावहुलो निर्मासश्चेति वातात् ॥ ६ ॥
क्षिप्रज पीतनीलाभकिंशुकोदकाभोष्णस्त्रावी दाहपाकरागवि-
कारी पीतपिडिकाजुष्टश्चेति पित्तात् ॥ ७ ॥

ठंडा, सुरस्त्री लिये, छोटा जो व्रण हो तथा ठंडा, गाढ़ा और थोड़ा जिसमें स्याव हो, मृत्वा हो, जिसमें चटचटतीसी उठे और स्फुरायमान हो, जिसमें जग मुड़े नहीं, जिसमें चीस और भेदन करनेकासा दुःख और पीड़ा अधिक हो तथा निर्मास हो उसे वातज व्रण जानो ॥ ६ ॥ जो क्षीघ्र उत्पन्न हो और बड़े, जिसमें पीलापन और नीलापन हों, जिसमेंसे कसके फूटके रंग जैसा गरम स्याव हो, जिसमें जलन और पकानेकीसी पीड़ा और राग (चमक) इत्यादि विकार हों और आसपासमें पीली २ फुन्सिया हों उसे पित्तज व्रण जानो ॥ ७ ॥

प्रततचंडकडूबहुल स्थूलो घनः मन्थशिरान्नायुजालावनत-
कठिन पाडूवभासो मदवेदन शुरुशीतसाद्रपिच्छलान्नावी गुरु-
श्चेति कफात् ॥ ८ ॥ प्रवालदलनिचयप्रकाश कृष्णस्फोटपिट्टि-
काजालोपचितस्तुरगस्थानगध सवेदनो धुमायनशीलो रक्त-
स्त्रावी पित्तलिंगश्चेति रक्तात् ॥ ९ ॥

जो फेग हुआ हो, उंचा हो, जिसमें खान अधिक हो, मोटा हो कटा हो, म्विचो हुई रंगो और नमोके जालमें स्याव हो, कटार हो, जिसमें पीलापन झलके, थोड़ी २

कपाट (टकरा खोपरी), सींग और चक्र (पहियेकी रगत), इषु (सींग) तथा परशु (कुन्दाटा), शक्ति (बरडी), कुत (तोमर) आदि शस्त्रोंकी चोट लगनेसे कारणसे उत्पन्न हो उसे आगतुक प्रग कहते हैं ॥ १ ॥

तत्र तुल्ये व्रणसामान्ये द्विकाम्णोत्थानप्रयोजनसामर्थ्याद्विप्रणीय
उत्पुच्यते ॥ २ ॥

व्रणमात्र सामान्यतामें तुल्य होनेपरभी दो कारणोंमें उत्पन्न होते हैं इस प्रयोजनसे ' द्विप्रणीय ' ऐसा कहा जाता है ॥ २ ॥

आगतुक व्रणमें तात्कालिक विधि ।

सर्वस्मिन्नेवाऽऽगतुनणे नत्कालमेव क्षतोर्मणः प्रसृतम्योपेक्षमायं
पित्तवच्छीतक्रियाधारणविधिर्विशेष संधानार्थं च मधुघृतप्रयोग
इत्येतद्विकारणोत्थानप्रयोजनमुत्तरकाल तु दोषोपहतविशेषाच्चा
रीरवत्प्रतीकार ॥ ३ ॥

सब प्रकारके आगतुक व्रणोंमें (आघात होतेही) तत्काल पायसी गरमोंफेंली-
की शीतिके त्रिपे पित्तकी शीतिके समान शीतल त्रिपाटा अथवा कारण करना विशेष-
विधि है (अर्थात् ताजे आगतुक क्षतपर उसी समय ठंडा पानी डालना, भौंगा
मपड़ा लपेटना आदि उचित है) और पायसे भरनेके त्रिपे दाढ़न और घृतघा
टपयोग पर यह दोनों प्रकारके व्रणोंमें योग्यता परमकते हैं और आगतुक व्रण
भी अधिक दिनरा होनासे (परगाने, महगमे अच्छा न हो) तो फिर क्षयोही
उत्पन्नताके भेदमें शीतल व्रणों समान विधिसा करना चाहिये ॥ ३ ॥

व्रणमें दोष भेद ।

दोषोपहृतविशेष पुनः समासित पचदशप्रकार प्रसरणमासर्प्या-
पथोक्ती व्रणप्रभाविनारे शुद्धस्वात्पोडशप्रकार इत्येके ॥ ४ ॥

दोषों (वायु, पित्त, कफ और रुधिर इन चारों) के उपपन्न (उत्पन्न) के जो
पचदश भेद प्रसरणकी सामर्थ्यमें होते हैं ये व्रणप्रभाविनारे (समत्वानरं इहामयं
आपाय) में वर्णन हो रहे हैं इनमें अतिरिक्त सारे दोषोत्पत्ति शुद्ध व्रण तथा
सौख्यकी भेद कई आचार्य एक ही मानते हैं ॥ ४ ॥

(पित्तव्रण) सूक्ष्मस्थान २१ में अपासमें दोषोंके प्रसरणक्रममें १५ भेद
कहे हैं जिसमें किसी दोषाकारण अन्तर्ग कहा है परन्तु निरिच्छित स्वानर
इति कारणसे यह अन्तर्ग (भेद) नहीं लिख महर्षिपञ्चरत्नोक्ति की

व्रणके सामान्य विशेष लक्षण ।

तस्य लक्षणं द्विविधं सामान्यं वैशेषिकश्च तत्र सामान्यं रुक् ।
'व्रण' गात्रविचूर्णने । व्रणतीति व्रणः विशेषलक्षण पुनर्वातादि-
लिंगविशेषः ॥ ५ ॥

व्रणमात्रके लक्षण दो प्रकारके हे सामान्य और विशेष । जिसमे सामान्य लक्षण
तो पीड़ा होनाही है । 'व्रण' धातु गात्रके विचूर्णन अर्थमें है उससे व्रण शब्द (क्षत-
वाचक) बनता है इसके विशेष लक्षण वात-पित्त-कफ—हरि-वातपित्त-
वात-कफ आदि भेदसे (एक एक दोषके तथा दो दो दोष मिलकर और तीन तीन
दोष मिलकर तथा चारों दोष मिलकर) पदह प्रकारके अथवा शुद्ध व्रण महित
१६ प्रकारके होते है जिन्हें जुदा जुदा वर्णन करते है ॥ ५ ॥

वातादिभेदसे १५ प्रकारके व्रणलक्षण ।

तत्र श्यावारुणाभस्तनु शीतपिच्छलाल्पस्त्रावी रूक्षश्चटचटायन-
शीलः स्फुरणागमतोदभेदवेदनावहुलो निर्मासश्चेति वातात् ॥ ६ ॥
क्षिप्रजः पीतनीलाभकिंशुकोदकाभोष्णस्त्रावी दाहपाकरागवि-
कारी पीतपिडिकाजुष्टश्चेति पित्तात् ॥ ७ ॥

ऊदा, सुरखा लिये, छोटा जो व्रण हो तथा ठंडा, गाढ़ा और थोड़ा जिसमें
स्त्राव हो, रुखा हो, जिसमें चटचटीसी उठे और स्फुरायमान हो, जिसमें अग
सुडे नहीं, जिसमें चीम और भेदन करनेकासा दु ख और पीड़ा अधिक हो तथा
निर्मास हो उसे वातज व्रण जानो ॥ ६ ॥ जो शीघ्र उत्पन्न हो और बड़े, जिसमें
पीलापन और नीलापन हों, जिसमेंसे कसुके फूलके रंग जैसा गरम स्त्राव हो,
जिसमें जलन और पकानेकीसी पीड़ा और राग (चमक) इत्यादि विकार हों
और आसपासमें पीली २ फुत्तिया हों उसे पित्तज व्रण जानो ॥ ७ ॥

प्रततचडकड्वहुल स्थूलो घन मन्थशिरान्नायुजालावतत-
कठिन पांडवभासो मदवेदन शुहृशीतसाद्रपिच्छलास्त्रावी गुरु-
श्चेति कफात् ॥ ८ ॥ प्रवालदलनिचयप्रकाश कृष्णस्फोटपिडि-
काजालोपचितस्तुरगस्थानगः सवेदनो धूमायनशीलो रक्त-
स्त्रावी पित्तलिंगश्चेति रक्तात् ॥ ९ ॥

जो फेला हुआ हो, उचा हो, जिसमें खाज जविय हों, मोटा हो कड़ा हो, खिंचा
हो रंग और नमी जालमें ग्यात हो, पठोर हो, जिसमें पीलापन सलवे, पीटी २

कपाल (टंकरा छोपरों), माँग और चक्र (पहियेकी रगट), दण्ड (मीरा) तथा परशु (फुहाटा), शक्ति (चरडी), पुन (ताम्पर) आदि शस्त्रोंकी मोटा जगहों पर फाणसे टपका हो उसे आगतुक प्रग कहते हैं ॥ १ ॥

तत्र तुल्ये व्रणसामान्ये द्विकारणोत्थानप्रयोजनसामर्थ्याद्विजणीय इत्युच्यते ॥ २ ॥

व्रणमात्र सामान्यतासे तुल्य होनेका भी दो कारणोंसे उत्पन्न होना है इस प्रयोजनसे "द्विजणीय" ऐसा कहा जाता है ॥ २ ॥

आगतुक व्रणमें तात्कालिक विधि ।

सर्वस्मिन्नेवाऽऽगतुव्रणे तत्कालमेव क्षनोष्मेण प्रमुनस्योपेक्षनाथं पित्तवच्छीनक्रियावधारणविधिविशेष सधानार्थं च नपुधृतप्रयोग इत्येतद्विकारणोत्थानप्रयोजनमुत्तरकालं तु दोषोपपन्नविशेषान्द्वारैश्चत्प्रतीकार ॥ ३ ॥

सब प्रकारके आगतुक व्रणोंमें (आघात होनेकी) तत्काल पावरी गरमी फैलनेकी शक्तिये जिये पित्तकी शक्तिके समान शीतल क्रियाका अवधारण करना विशेष ध्यानविधि है (अर्थात् ताजे आगतुक धतपर उसी समय ठंडा पानी डालना, भोला कपड़ा लपेटना आदि उचित है) और पावरी भरनेके जिये शूल और पुनका उपयोग पर पर दोनों प्रकारके व्रणोंमें योग्यता परसकते हैं और आगेदुक धत भी अधिक दिनका होनाय (पचनाय, सड़नेमें अच्छा न हो) तो फिर दापोरी उल्लेखताके भेदसे आरारक व्रण समान निमित्ता परनी चाहिये ॥ ३ ॥

व्रणमें दोष भेद ।

दोषोपपन्नविशेष. पुन समासत पंचदशप्रकार प्रसरणसामर्थ्याद्यथोक्तो व्रणप्रवृत्ताधिकारः श्रुत्स्वर्गत्योदशप्रकार इत्येके ॥ ४ ॥

दोषों (पाण, पित्त, कफ और रुधिर इन चारों) के उपपन्न (उत्पन्न) के जो पट्ट भेद प्रसरणकी सामर्थ्यसे होतेहैं वे व्रणप्रवृत्ताधिकार (सुदरपाठके इकतीस अध्याय) में वर्णन होयुं हैं इनके अधिकृत सर्व दोषोपपन्नविशेष मुट प्रग एका सोलहवीं भेद परे आचार्य पद और मानते हैं ॥ ४ ॥

(पाठ्य) सुदरपाठके २७ वे अध्यायमें दोषोंके प्रसरणक्रममें १५ भेद कहे हैं जिसकी विधी टीकाकारों ने अलग कर दी परन्तु जिसविधि व्याख्ये की है पाठ्यमें पद अचार्य (टीका) की विधि मर्मविषयकविशेष ही मान्य सिद्ध होगी ॥